कृष्णदास संस्कृत सीरीज २९६

कश्यपसंहिता

पाठसंवादसंवलितः 'नारायणी' हिन्दीटीकासहितश्च

पुरोवाक्
प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय

सम्पादकोऽनुवादकश्च
डॉ. चन्द्रमौलि रैणा

सह सम्पादक
डॉ. वर्चस्काम शास्त्री

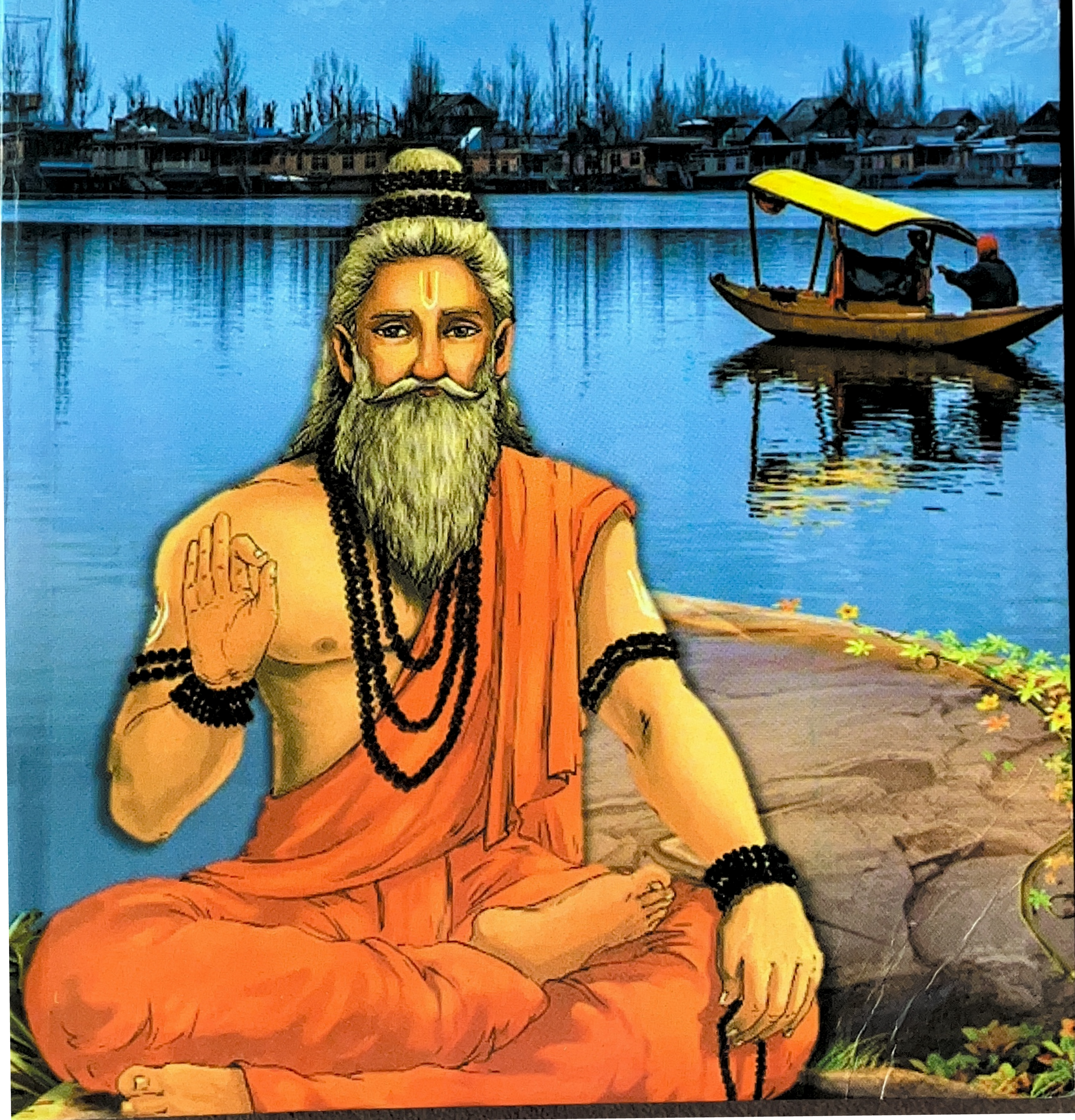

भूमिका

दिवाकरं ग्रहाधीशं हेरम्बञ्च सरस्वतीम्।
विविच्यते प्रणम्यादौ कश्यपस्यां हि संहिताम्।।

भारतवर्ष में आर्यों की सभ्यता कई प्रकार के प्रमाणों से सिद्ध हो चुकी है; परन्तु भारतीय कला शास्त्र का वास्तविक ज्ञान परिज्ञान हमें पूर्णतया नहीं मिलता, इसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र के अनगिनत ग्रन्थ रत्नों का पता ही नहीं लगता, बहुत से देशी-विदेशी राजकीय पुस्तकालयों में वर्तमान काल में भी कुछ दिव्य ग्रन्थ सर्वजन के लिए अलभ्य हैं। ब्रह्मर्षि कश्यप द्वारा विरचित 'कश्यपसंहिता' भी अलभ्य ग्रन्थों में एक है।

समस्त प्राणियों के आधिभौतिक, अध्यात्मिक, आधिदैविक तीन प्रकार के दु:खों को विनाश करने में पूर्णरूपेण सशक्त और चतुवर्ग प्राप्ति के अत्यन्त प्रभावशाली सुन्दर मार्गदर्शक वेद हैं। भारतीय संस्कृति का मूलाधार वेद हैं, वेदों से ही हमें अपने और सदाचार का ज्ञान होता है। हमारी सामाजिक, पारिवारिक, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक विचारधाराओं के मुख्य स्रोत भी वेद ही हैं।

*१. शिक्षा, २. कल्प, ३. व्याकरण, ४. निरूक्त, ६ छन्द तथा ६. ज्योतिष इन्हें षड्वेदाङ्गों की संज्ञा दी गई है। मन्त्रों के उचित उच्चारण हेतु शिक्षा का, कर्मकाण्ड और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए कल्पका, शब्दों के सही ज्ञान के लिए व्याकरण का, अर्थ ज्ञान के निमित्त शब्दों के विवेचन के लिए निरूक्त का, वैदिक छन्दों के ज्ञान हेतु छन्द का और अनुष्ठानों के उचित काल निर्णय के लिए ज्योतिष की उपयोगिता सर्वमान्य है।

ब्रह्मर्षि कश्यप ने ज्योतिषशास्त्र और वेद का परस्पर अन्योन्याश्रय भाव सम्बन्ध स्वीकार किया है।

एवं लक्षण संयुक्तमुक्तं स्कन्दद्वयन्ततः।
साम्प्रतं संहिता स्कन्धमेवं लक्षणसंयुतम्।।
वक्ष्येऽहं कश्यप ब्रह्मा हितार्थं देहधारिणाम्।
सम्बन्धस्तस्य शास्त्रस्य वेदाङ्गमिति धातृता।।

(कश्यपसंहिता १-१७-१८)

---

* शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषीश्रोत्रतमुक्तं च कल्पं करौ।
या तु शिक्षाऽस्य वेदस्य सा नासिका पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः।।

(सि.शि. ग्रहणगिते श्लोक १०)

www.drdmraina.com

वेदों के साथ परस्पर सम्बन्ध होने से ज्योतिष शास्त्र का अत्यन्त महत्त्व सिद्ध होता है। भूतल, अन्तरिक्ष एवं भूगर्भ के प्रत्येक पदार्थ का त्रैकालिक ज्ञान जिस शास्त्र से होता है वह ज्योतिष शास्त्र है। ब्रह्मर्षि कश्यप ने ज्योतिष शास्त्र अध्ययन का क्या प्रयोजन है? इस सन्दर्भ में निरूपण करते हुए लिखा है-

शुभाशुभस्य जगतामभिधेयं निरूपणम्।
ग्रह ग्रहण संक्रान्तिर्यज्ञाध्ययन कर्मणाम्।।
प्रयोजनं व्रतोद्वाह क्रियाणां कालनिर्णयः।
एतद्विना न सिद्धयन्ति श्रौतस्मार्ताखिलाक्रियाः।।

(क.सं. १-१९-२०)

संसार का शुभाशुभ निरूपण, ग्रहचार, ग्रहण संक्रान्ति, यज्ञ, विद्याध्ययन, व्रतबन्ध, विवाहादि संस्कारों का काल निर्णय ज्योतिषशास्त्र का प्रयोजन है। इस शास्त्र के बिना श्रौत, स्मार्त विहित सभी क्रियाकलाप सिद्ध नहीं हो सकते। ज्योतिष शास्त्र से त्रैकालिक प्रभाव को जाना जा सकता है। गर्भ से लेकर मृत्यु तक और उसके पश्चात् भी परलोक पुनर्जन्म की बातों को ज्योतिष शास्त्र अभिव्यक्त करता है।

ज्योतिष शास्त्र कालबोधक शास्त्र है। इस सन्दर्भ में **'वृद्धवसिष्ठ'** भी लिखते हैं, तद्यथा—

क्रतुक्रियार्थश्रुतयः प्रवृत्ता कालाश्रयास्ते क्रतवोनिरुक्ताः।
शास्त्रादमुष्मात्किल कालबोधो वेदाङ्गताऽमुष्य ततः प्रसिद्ध।।

(वृद्धवसिष्ठसंहिता १-४)

वेदों का प्रवर्तन यज्ञ-क्रियाओं के सम्पादनार्थ हुआ, वे यज्ञकाल के आश्रित कहे जाते है। और काल इस ज्योतिष शास्त्र से जाना जाता है। ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्त, होरा एवं संहिता- ये तीन स्कन्ध हैं। इन तीनों स्तम्भों पर ही ज्योतिषशास्त्र स्वरूप विशाल प्रासाद टिका हुआ है। एक भी स्तम्भ में कुछ हीनता हो जाए तो प्रासाद अवनत हो जाता है अतः ज्योतिष शास्त्र को यथार्थ रूप में समझना हो तो तीनों स्कन्धों का भलीभान्ति ज्ञान परमावश्यक है। ब्रह्मर्षि कश्यप ने तीनों स्कन्धों के सन्दर्भ में विशेष रूप से प्रतिपादन किया है तद्यथा-

सिद्धान्तविषयानुक्रम

ग्रहाणां मध्यमाभुक्तिः स्फुटभुक्तिरनन्तरम्।
दिक्साधनं ततश्छाया लग्नकालविनिर्णयः।।
चन्द्रार्कग्रहणं सम्यक् तयोश्च परिलेखनम्।
भागमोयुद्धभेदो भग्रहाणां युतिस्तथा।।

www.drmraina.com

उदयास्तमय ज्ञानं चन्द्रशृङ्गनतोन्नतिः।
पात वैधृतयोर्भेदौ भूगोलं यन्त्रलक्षणम्॥
मान क्रिया मानभेदाश्चाद्य स्कन्धे प्रकीर्तिताः।

(क.सं १-५-७$\frac{१}{२}$)

प्रथम सिद्धान्त स्कन्ध में ग्रहों की मध्यम भुक्ति, स्फुट भुक्ति, दिक्साधन, छाया साधन, लग्नकाल निर्णय, सूर्यचन्द्रग्रहण और उनकी परिलेखन पद्धति, समागम, ग्रहयुद्धभेद, नक्षत्र और ग्रहयुति उदयास्तज्ञान, चन्द्र शृङ्गोन्नति साधन, पात और वैधृति के भेद, भूगोलाध्याय, यन्त्रलक्षण, नवविधमान तथा मानभेद ये सभी सिद्धान्त स्कन्ध में वर्णित हैं।

होराशास्त्र विषयानुक्रमः

राशिभेदः खेटयोनिर्जन्मलक्षणम्।
निषेको जननं पुंसामरिष्टं भङ्गलक्षणम्॥
आयुर्दायो दशाभेदाश्चान्तर्दशासु।
अष्टवर्गः कर्मजीवो राजयोगा अनेकशः॥
चन्द्रयोगा द्विग्रहाद्याः प्रव्रज्या योग सम्भवाः।
राशिशीलं दृष्टिफलं ग्रहभावफलं ततः॥
आश्रयाख्याश्च ये योगाः संकीर्ण सम्भवाः।
स्त्रीजातकं नष्टयोगं निर्याणं नष्टजातकम्॥
द्रेष्काणश्च क्रिया योगा द्वितीयस्कन्धसम्भवाः।

(क.सं. १-८/१२)

राशिभेद, ग्रहयोनि, वियोनिजन्म, निषेक प्रकरण, जन्माऽरिष्ट, अरिष्टभङ्ग, आयुर्दाय, दशान्तर दशाओं का भेद, अष्टवर्ग, कर्मजीव, नाना प्रकार के राजयोग, चन्द्रयोग, द्विग्रहयोग, प्रव्रज्या योग, राशि शील, दृष्टिफल, ग्रहों का भावफल, आश्रय योग, संकीर्ण योग, स्त्री जातक, नष्ट जातक, निर्याण, द्रेष्कान और क्रिया योग ये द्वितीय स्कन्ध (होरा शास्त्र) के विषय हैं।

संहिताविषयानुक्रमः

आदौ शास्त्रोपनयनं खेटचारोऽब्दलक्षणम्।
तिथिवासर नक्षत्रयोग तिथ्यर्ध लक्षणम्॥
मुहूर्तोपग्रहः सूर्य संक्रान्तिर्गोचर क्रमः।
चन्द्रताराबलश्चैव क्रियाः षोडशकर्मणाम्॥
छुरिकाबन्धनं यात्रा प्रवेशो वास्तुलक्षणम्।
नृपाभिषेचनं देवप्रतिष्ठावस्त्रलक्षणम्॥

www.drcmraina.com

अग्न्याधानं मेघगर्भं निखिलोत्पातलक्षणम्।
तच्छान्तिर्मिश्रकाध्यायस्तृतीय स्कन्धसम्भवाः॥

(क.सं. १-१३-१६)

शास्त्रोपनयन, खेटचार, संवत्सर लक्षण, तिथिवार, नक्षत्र, योग, करण, मुहूर्त, उपग्रह, सूर्यसङ्क्रान्ति, गोचर क्रम, चन्द्रताराबल, षोडशसंस्कारों के मुहूर्त, छुरिकाबन्धन, यात्रा, वास्तु, गृहप्रवेश, राजाभिषेक, देहप्रतिष्ठा, वस्त्रलक्षण, अग्न्याधान, मेघगर्भ, उत्पात और उनकी शान्ति, मिश्रका अध्याय ये तृतीय स्कन्ध (संहताशास्त्र) के लक्षण हैं।

ज्योतिष के प्रकर्षों का क्रमबद्ध ज्ञान उपलब्ध नहीं होता फिर भी यह निर्विवाद है कि ज्योतिष शास्त्र में संहिताओं की रचना सर्वप्रथम हुई। इसके प्रमाण फलस्वरूप हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों के नाम पर संहिता ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। संहिता ग्रन्थों की रचनाओं के उपरान्त होरा (जातक) ग्रन्थों की रचना हुई; क्योंकि आचार्य वराहमिहिर ने अपने होरा ग्रन्थों में ऋषिमुनियों के नामों की चर्चा की है। इससे सिद्ध हो जाता है कि संहिता ग्रन्थों के निर्माण के पश्चात् ही होरा ग्रन्थों का लेखना हुआ है। ऋग्वेद में ज्योतिषशास्त्र की प्रमाणिकता के उदाहरण मिलते हैं, सनातन धर्म की सब से प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद ही है।

यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसा विध्यदासुरः॥
अत्रयस्तमन्वविन्दन् न ह्यान्ये अशक्नुवन्॥

(ऋ. ५:४०-९)

ऋग्वेद के इस मन्त्र में सूर्य-चन्द्र ग्रहण के सन्दर्भ में कहा गया है कि सर्वप्रथम अत्रि ऋषि ने सूर्यचन्द्र ग्रहण को अपनी दिव्य दृष्टि से देखा और इसका ज्ञान सबको दिया। वर्तमान् में भी सूर्य/चन्द्र ग्रहण सम्भव होते हैं, ग्रहण कब, कहाँ, कितने समय के लिए लगेगा इसका ज्ञान केवल ज्योतिषशास्त्रीय गणित प्रक्रिया से होता है। यहाँ विज्ञान विज्ञ अपने आपको शून्य समझते हैं; क्योंकि वे ग्रहण के लिए पूर्व ज्ञान नहीं करवा सकते, केवल मात्र ग्रहण घटित समय (Astrotelescope) से ही बता सकते हैं अतः यह कहना होगा कि ज्योतिष एक दिव्य शास्त्र है, जिसकी संरचना हमारे पूज्य १८ ऋषियों ने की है।

ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्तक

सूर्यः पितामहोव्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः।
कश्यपोनारदो गर्गो मरीचिमनुरङ्गिराः॥

www.drcmraina.com

लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनोभृगुः।
शौनकोऽष्टादशश्चैते ज्योतिश्शास्त्र प्रवर्तकाः॥

(क.सं १-२-३)

सूर्य, पितामह, व्यास, वसिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अङ्गिरा, लोमश, पौलिश, च्यवन, यवन, भृगु और शौनक ये अष्टादश ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्तक हैं। प्रायशः सभी विद्वानों का मत है कि अष्टादश ज्योतिषशास्त्र प्रवर्तकों के अपने-अपने संहिता ग्रन्थ थे; परन्तु उन ऋषियों के मध्य में केवल गर्ग, वसिष्ठ, नारद, लोमश, कश्यप इत्यादि ऋषियों द्वारा विरचित संहिता ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं शेष उपलब्ध नहीं होते। इसके अतिरिक्त जैन आचार्यों द्वारा सम्पादित भद्रवाहु संहिता तथा आचार्य वराहमिहिर द्वारा विरचित वाराही संहिता भी सुलभता से उपलब्ध है। बृहत्संहिता के अतिरिक्त नारद संहिता, वृद्ध वसिष्ठ संहिता, इत्यादि मुद्रित रूप में सुलभ हैं; परन्तु अन्य संहिता ग्रन्थ नहीं। मेरे पूज्य गुरुजी डॉ. बिहारीलाल वसिष्ठ जी ने **'कश्यप संहितायाः समीक्षात्मकं सम्पादनम्'** शोध प्रबन्ध राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान में पूज्य गुरु जी प्रोफेसर रामचन्द्र पाण्डेय जी के कुशल निर्देशन में विद्यावारिधि (पी.एचडी) हेतु १९८६ में प्रस्तुत किया था उनको ९ मार्च १९८९ को विद्यावारिधि (पी.एचडी) की उपाधि प्राप्त हुई तब से यह दुर्लभ ग्रन्थ श्रीरणवीर परिसर जम्मू पुस्तकालय में पड़ा हुआ था उन्होंने तीन पाण्डुलिपियों के आधार पर पाठ संशोधित किया था मैंने पाठ का हिन्दी रूपान्तर किया है।

हस्त लेखों का परिचय

जम्बुस्थ मातृका	–	३९९१ ग्रन्थानुक्रमाङ्क
पत्रसंख्या	–	१५१
पत्राकार	–	१३.४ × ७.५
पृष्ठेपंक्ति संख्या	–	१३/१४
प्रतिपंक्ति अक्षर संख्या	–	३६ से ४२
लेखन काल लेखक	–	अनुमान से विक्रमी संवत् १९३५ से १९४० तक
लेखक	–	ब्रह्मषि कश्यप
प्रतिलिपिकार	–	नहीं लिखा
नेपालस्थ मातृका	–	२०२४ ग्रन्थानुक्रमाङ्क
पत्र संख्या	–	फोटो प्रतिलिपि में नेपाल काठमाण्डौ से प्राप्त
पत्राकार	–	१५.० × ८.०० पृष्ठे पंक्तिसंख्या – १२
प्रतिपंक्ति अक्षर संख्या	–	४१ से ४८
लेखन काल	–	पता नहीं
लेखक	–	ब्रह्मर्षि कश्यप

www.drcmraina.com

प्रतिलिपिकार – नहीं लिखा
मद्रासीयमातृका – ७९८४ ग्रन्थानुक्रमाङ्क
पत्रसंख्या – १३९
पाण्डुलिपि का आकार-प्रकार – प्रायशः ३० प्रतिशत शब्द कीट भक्षित थे।
पाण्डुलिपि प्राप्ति – के. एन. कृष्ण सरीन, ए सुबरेया भट्ट द्वारा प्राप्त हुई।

सहायक ग्रन्थ–मुहूर्तचिन्तामणि पीयूषधारा, प्रतिमाक्षरा, मुहूर्तसिन्धुः, मुहूर्त दिवाकर, मुहूर्तदर्पण, मुहूर्तभूषण, मुहूर्तमञ्जरी, मुहूर्त माला, ज्योतिःसार, ज्योतिः सर्वस्व, ज्योतिर्निबन्ध सर्वस्व, जगन्मोहन, स्मृतितत्त्व, निर्णयसिन्धुः, धर्मसिन्धु, श्रीरणवीरज्योतिर्निबन्ध इत्यादि अनेक ग्रन्थों की सहायता से पाठ शुद्ध हुआ।

पाठा संवादार्थ गृहीत नियम

भण्डारकर रिसर्च इंस्टीच्यूट पूना, सर्वभारतीय काशी राजन्यास द्वारा गृहीत सारिणी का अनुसरण करके पाठान्तर किया गया है। प्रत्येक अध्याय के पश्चात् क्रमबद्ध विधिसे पाठान्तर दिया गया है। शुद्ध पाठ की सुविधा के लिए पाठान्तर के अन्त में कोष्टक में वाणनिर्देश से शुद्ध पाठ भी लिख दिया है। श्लोकों को पाद के अनुसार (अ.व.स.ड) पाठान्तर किया है। जैसे—इसी प्रकार जिस श्लोक के पाद में जो पाठान्तर या अधिक पाठान्तर उपलब्ध हुए उनका वर्णन श्लोक संख्या, पाद संख्या एवं पाण्डुलिपि संख्या अनुसार दिया गया है। उदाहरणार्थ—

आतङ्कावृष्टि संग्राम दुर्भिक्षानलतोभयम्।
विष्णुद्वय विश्वेन्दु धातृभेषु चरन्बुधः॥

श्लोक संख्या — २ अ. जम्मू-आतक, मद्रास आतकं
(आतङ्कावृष्टि संग्राम)
व, जम्मू- दुर्भिक्षाटन तो (दुर्भिक्षानलतोभयम्)
सज- विष्णभद्वय म-विष्णुद्वितीय (विष्णुद्रय) ज- विश्वेन्दो (विश्वेन्दु)
ड. ज. धातृभीषु (धातृभेषु)

यहाँ पर मूल पाठ के अतिरिक्त प्रसङ्गानुकूल पाठ मिला तो उस पाठ को भी मूल पाठ में दिया हुआ है यदि मूलपाठ से न्यून पाठ पाण्डुलिपि में जहाँ-जहाँ मिला वहाँ-वहाँ पाठोनास्ति लिखा गया है। अध्याय के अन्त में पुष्पिका पाठ भी दिया है, पुष्पिकाओं के मध्य में जो पाठान्तर उपलब्ध हुआ उस का निर्देश भी किया गया है।

हस्तलेखों की संख्या मात्र तीन ही थी, कहीं-कहीं अन्य सहायक ग्रन्थों में उपलब्ध 'कश्यपसंहिता' का पाठ भी शुद्धि करने में सहायक हुआ। जहाँ-जहाँ संदिग्ध पाठ का निर्णय यथामति करके मूलपाठ में स्थापित कर पाठान्तर में दे दिया है। इस का निर्णय स्वयं विद्वान् लोग कर सकते हैं।

www.drcmraina.com

कश्यप संहिता का परिचय

सप्तर्षियों में सर्व प्रथम कश्यप ऋषि का नाम है। अत: ब्रह्मर्षि कश्यप द्वारा विरचित 'कश्यप संहिता' का प्रमुख स्थान है। इस ग्रन्थ में प्रायश: संहिता पदार्थों का सम्यग्तया विवेचन किया गया है। इस ग्रन्थ की रचना स्वयं ब्रह्मर्षि कश्यप ने की है। अत: आर्ष ग्रन्थ के रूप में इस ग्रन्थ की प्रतिष्ठा है। यह सर्वविदित सुप्रसिद्ध हैं कि महर्षि कश्यप का नाम ज्योतिष शास्त्र के अष्टादश प्रवर्तकों में आता है। इस ग्रन्थ में (४९) उन्नचास अध्याय हैं। अध्यायों का वर्गीकरण एवं विषयों का विभाजन क्रमानुसार सुव्यवस्थित विधि से किया गया है। संक्षेप में अध्यायों का विवरण लिखते हैं—

शास्त्रस्वरूपाध्याय से दशम अध्याय पर्यन्त नौ ग्रहों का चार, एकादश अध्याय में नौ विध मानों का पृथक्-पृथक् प्रतिपादन, प्रभवादि षष्टी संवत्सरों के नाम तथा उन के पृथक्-पृथक् शुभाशुभ फलादेश, वर्षेश सेनापति, रसाधिपति निर्णय, सूर्यादि वर्षेश्वरों का फल, दक्षिणायन-उत्तरायण कर्तव्यताकर्तव्य व्यवस्था, षट् ऋतु व्यवस्था, द्वादश अध्याय में तिथियों के स्वामी, प्रतिपदादि तिथियों में कृत्य व्यवस्था, पक्षरन्ध्र तिथियां, दन्तधावन, क्षौरकर्म, तैलाभ्यंग निर्णय, युग कल्पादि तिथियां, सफल-गजच्छायायोग, त्रयोदश अध्याय में वारों की सबल सिद्धि, वार - प्रवृत्ति, बलाबल तथा शुभवारों की प्रशंसा, कुलिक, यमघण्टक अर्धयाम मुहूर्त, क्षणिकवार (होरा) निर्देश, वारप्रवृत्ति, काल होरा, प्रयोजन, चतुर्दश अध्याय में, नक्षत्रों की प्रशंसा, अश्विन्यादि नक्षत्रों के स्वामी, नक्षत्रों का शुभाशुभ फल, अधोमुख संज्ञक नक्षत्र, ऊर्ध्वमुख नक्षत्र, गजकृत्य, अश्व कृत्य, बीजारोपण मुहूर्त इत्यादि पञ्चदश अध्याय में सत्ताईस योगों के स्वामी, त्याज्य योग, एकार्गल-खार्जूरिक चक्र, सोलहवें अध्याय में करणों के स्वामी, भद्रा का अङ्ग विभाग, सप्तदश अध्याय में मुहूर्तों की प्रशंसा, दिवा रात्रि मुहूर्त, दिवा, पौराणिक मुहूर्त, अभिजित, कुतपलक्षण क्षणिक पञ्चाङ्ग निर्णय, अष्टादश अध्याय में उपग्रहों के नाम तथा ज्ञान, ककच-संवर्त योगों का वर्णन, उन्नीसवें अध्याय में सफल संक्रान्तियों के नाम, नक्षत्रानुसार संक्रमण फल, सूर्य की उदित सुप्त अवस्था, नक्षत्रों की अन्ध-मन्द सुलोचनादि संज्ञा, संक्रान्तियों का पुण्यकाल निर्णय, क्रूर फल की निवृत्ति हेतु दान, सूर्य-चन्द्र एवं ताराबल की विशेषता, बीसवां गोचराध्याय, कैसे ज्योतिषी की निन्दा, ग्रहों की निष्फलता, नव ग्रहों के रत्न, इक्कीसवां चन्द्रताराबलाध्याय, जन्म-सम्पत्, विपद क्षेमादि नौ ताराओं के नाम एवं फल, बाइसवें अध्याय में मेषादि द्वादशलग्नों के कृत्य, राशियों तथा ग्रहों का शुभत्व एवं पापत्व, ग्रहों की युति-दृष्टि से राशियों का स्वभाव परिवर्तन, चौर्यकर्म वर्णन, शस्त्र शास्त्र अभ्यासियों का सिद्धिकाल-श्रुति-स्मृति पुराणोक्त धर्म कार्यों का प्रारम्भकाल, चन्द्रमा का बलाबल निरुपण, ग्रहों का शुभाशुभत्व निर्णय-तेईसवें प्रथमार्तवाऽध्याय में प्रश्न लग्न से विचार, रविवारादि

www.drcmraina.com

वशात् प्रथम रजोधर्म का फल, नक्षत्र वशात् प्रथमार्तव का फल, निन्द्य पञ्चाङ्ग में पुष्पदर्शन, आधान मुहूर्त एवं गर्भ में पुत्र-पुत्री ज्ञान, चौबीसवें अध्याय में पुंसवन मुहूर्त विचार, मासाधिपति, लग्न एवं ग्रह शुद्धि विचार, सीमन्त में लग्न शुद्धि विचार- पच्चीसवें अध्याय में जातकर्म, नामकरण, छब्बीसवें अध्याय में शिशुओं का अन्नप्राशन काल निर्णय, अन्नप्राशन लग्न में भिन्न-भिन्न ग्रहों का फल, सताईसवें अध्याय में चौलकर्म, चौल कर्म में पञ्चाङ्ग शुद्धि, जन्म नक्षत्र में शुभकार्य, प्रशस्ति, क्षौर कृत्य, कार्य विशेष में क्षौर कर्म सर्वकालिक, अट्ठाईसवें अध्याय में उपनयन प्रयोजन एवं काल निर्णय, यज्ञोपवीत के लिए पञ्चाङ्ग शुद्धि, व्रतबन्ध में उपयुक्त नक्षत्र, उन्नत्तीसवें अध्याय में समावर्तन में काल शुद्धि, मृण्मय-वंश पात्रों में देवपूजा विधान, मङ्गल कृत्यों में अंकुरारोपण, तीसवें अध्याय में विवाह प्रश्न लक्षण, तीन प्रकार के ऋण, चतुर्वर्ग प्राप्ति में मूल हेतु वर्णन, विवाहलग्न वशात् दम्पति का आयुष्य निर्धारण, कन्या को वर/वर को कन्या प्राप्तियोग, इकत्तीसवें अध्याय में उत्तम मुहूर्त में वाग्दान करने से पुत्र-पौत्र विवर्धन, वाग्दान मुहूर्त में पञ्चाङ्ग शुद्धि, वाग्दान विधि निरूपण, बत्तीसवें अध्याय में विवाह के लिए उपयुक्त समय व्यवस्था, चतुर्मास्य में मङ्गल कृत्यों का निषेध, श्री विष्णु प्रसुप्तावस्था में गुरुशुक्रास्त विचार, वृद्ध एवं अस्तंगत चन्द्रमा का प्रभाव, जन्ममासादि व्यवस्था, त्रिज्येष्ठ विचार, विवाह में गुरु-सूर्य का बल तिथि, वार, नक्षत्रादि का उत्तरोत्तर बलत्व प्रतिपादन, इक्कीस प्रकार के महादोष, इक्कीस दोषों का शुभाशुभ फल, षड्वर्ग विभाग, शुभाशुभ वर्ग विचार, भृगुषट्क योग, कुजाष्टमयोग, उद्यास्त शुद्धि, अशुद्धि कथन, दुर्मुहूर्त दोष, कालकूट दोष, विषघटी दोष, कुलिक, यमघण्टक, अर्धयाम संज्ञक वारदोष एवं शुभाशुभ फल, ग्रहण एवं उत्पात दोष, अकालिक गर्जित वृष्टि दोष, संवैधृति महापातदोष, संक्रान्तिदोष संग्रहदोष युक्त लग्न का फल, कर्तरीदोष लग्नफल, गण्डदोष युक्त लग्न फल, पापषड्वर्ग युक्त लग्न का फल, भृगुषट्क दोष, अष्टम भौम युक्त लग्न का फल, दुर्मुहूर्त दोष युक्त लग्न का फल, वरवधु विवाहलग्न का फल, विषनाड़ी, कुनवांश दोष, वारदोष युक्त लग्न का फल, खार्जूरिक दोष, उत्पात, ग्रहण, नक्षत्र, वृद्धक्रूर, अवशिष्ट अल्पदोष, लग्न निश्चयार्थ जलयन्त्र निर्माण, विवाह वेदिका निर्माण, विवाहलग्नस्थ ग्रहों का फल, अष्टकूट व्यवस्था योनि विवेक, नाड़ी दोष परिहार, तारा विवेक, वर्ग, राशिकूट व्यवस्था, अष्टविध विवाहलक्षण, अभिजित् गोधूलिलग्न प्रशंसा, सहोदर कन्याओं का छः मास के भीतर विवाह निषेध, सहोदर कन्याओं के विवाह की व्यवस्था, मूला आश्लेषा में उत्पन्न पुत्र-पुत्री का विचार, विवाह के पश्चात् वधु प्रवेश व्यवस्था, तेतीसवें अध्याय में दहन व्यवस्था, सपिण्डीकरणम् श्राद्ध के लिए निषिद्धकाल, महालय पक्ष में श्राद्ध महत्त्व, चौतीसवें अध्याय में छुरिका बन्धन का शुभ मुहूर्त, ध्वजादि संज्ञक छुरिका फल वर्णन, पैंतीसवें अध्याय में प्रश्न लग्न, शकुनादि द्वारा

www.drcmraina.com

यात्रा फल, दिशाशूल, नक्षत्रशूलादि विचार, लालाटिका योग एवं फल विचार, दक्षिण दिशा में यात्रा विचार, दक्षिण दिशा यात्रा में पंचक निषेध, राहुमुख एवं पुच्छ विचार, ग्रहस्थित्या जयपराजय विचार, यात्रा में द्वादश भाव विचार, योग, नक्षत्र, मुहूर्त शकुनादि विचार, विजय यात्रा योग, विजयदशमी यात्रा में शकुन विचार, यात्रा से पूर्व ग्रहों की शान्ति, प्रस्थान निर्णय, सिद्धिप्रद निमित्तों का विचार, शुभाशुभ शकुन विचार, सिद्धिप्रद निमित्तों का वर्णन, विरुद्ध शकुनादि में प्राणायाम् छिक्का विचार, युद्धयात्रा में कर्त्तव्यता विचार, छत्तीसवें अध्याय में नवगृहप्रवेश में समय शुद्धि, ग्रहशुद्धि, सैंतीसवें अध्याय में क्षेत्र स्वीकरणम् भूशुद्धि, गर्तलक्षण एवं द्वार निर्णय, एकशीति पदात्मक वास्तु न्यास, शुभाशुभांश निर्णय, गृहारम्भ में नक्षत्रवशात् ग्रहयोग विचार, मास शुद्धिः, अष्टवर्ग विचार, आय-ॠण विचार, सम-विषमाय तारा विचार, वास्तुमुखादि विचार, वास्तुस्थापनम्, शङ्कु न्यास का फल, ग्रहशाला भेदविचार १६ प्रकार के घरों का विचार, सर्वतोभद्र, नन्द्यावर्त वर्धमान, स्वस्तिकादि घरों के लक्षण, घर बनाने का क्रम, पूर्वादिक्रम से आयादि विचार, अष्टधा जलस्राव वर्णनम्, घर में अनुपयोगी काष्ठ विचार, दिशानुसार पितृ-भ्रात्रादि घर का विचार, घर में कूप, मङ्गलकारी वृक्षों का विचार अठत्तीसवें अध्याय में एकशीति पदात्मक वास्तु प्रतिष्ठा का महत्व, उन्नतालीसवें अध्याय में राजाभिषेक में गुरुशुक शुद्धि, राजा के जन्माङ्ग के अनुकूल ग्रहशुद्धि विचार, ग्रह गोचर एवं लग्न शुद्धि, चालीसवें अध्याय में कालशुद्धि, लग्नशुद्धि, पञ्चाङ्ग शुद्धि एवं ग्रह शुद्धि कथन इकतालीसवें अध्याय में अश्विनीभाद् वस्त्र धारण फलम्, नवधावस्त्र में देवनर पिशाचादि वर्णन, शङ्ख चक्रादि विभिन्न आकृतियों का फल, निन्दित वस्त्र परित्याग विधि, निन्द्यवार नक्षत्रादि में वस्त्रधारण विचार, बयालीसवें अध्याय में अग्नित्रय सेवी प्रशंसा, अग्न्याधान में लग्न चन्द्रताराादि शुद्धि, तैंतालीसवें अध्याय में वर्षा प्रश्न विचार, बुध-शुक्र-सूर्यादि ग्रहों का विशेष विचार, प्राच्य-प्रतीच्य नक्षत्रानुसारी शुक्र का फल, ग्रहोदयास्तार्द्रा प्रवेश समय वर्षायोग, वृष्टियोग विशेष, सद्योवृष्टि निमित्तानि, चौवालीसवें अध्याय में काकसंभोगक्षणोत्पात शान्ति, कुण्ड निर्माण, पूजा विधि, शान्ति विधान, कपोत, पिङ्गल मधुवल्मीक दोष शान्ति, पञ्चतालीसवें अध्याय में सकलोत्पात दर्शन लक्षण शान्ति, छ्यालीसवें अध्याय में शिथिली जनन विचार, दिशा भेद से शिथिली विचार, स्थानभेद से शिथिली फल, शिथिली दोष विधान, दिशा अधिपतियों की समिधाओं के नाम, व्याहृति मन्त्रों द्वारा अभिषेक, मृत्यु रूप प्रतिमा का दान, सैंतालिसवें अध्याय में इन्द्रलुप्तादि दूषित शरीर दोष शान्ति, अड़तालीसवें अध्याय में निखलोत्पात लक्षण, उल्का लक्षण, परिवेष लक्षण, इन्द्रचाप लक्षण, गन्धर्वनगर लक्षण, प्रतिसूर्यलक्षण, निर्घात लक्षण, दिग्दाहलक्षण, रजो लक्षण, भूकम्प लक्षण, उनचासवें मिश्रकाध्याय के अन्तर्गत राजा का आचार निर्देश, पञ्चाङ्ग सप्ताङ्ग मन्त्र

www.drcmraina.com

सिद्धि एवं राजा के गुण, राजा के नियम, विभिन्न दातुन प्रकार एवं लाभ-हानि, अश्व शान्ति, दीपावली को तैलाभ्यंग विचार, जन्माष्टमी विचार, शून्य संज्ञक तिथियां, गण्डमूल शान्ति विधान, १० प्रकार की औषधियों का वर्णन, बालक के अरिष्ट योग विचार, वालाऽरिष्टभङ्गयोग, नक्षत्रानुसार शुभाशुभ फल, जन्म नक्षत्र का नवांश के अनुसार शुभाशुभफल मिलते हैं इस प्रकार उनचास अध्यायों में ग्रन्थ की समाप्ति हो जाती है। इस ग्रन्थ में प्रयुक्त श्लोक एवं विषय आर्ष हैं तथा स्वयं ब्रह्मर्षि कश्यप द्वारा प्रणीत हैं इस ग्रन्थ पर अन्य ऋषियों और आचार्यों का प्रभाव नहीं है, प्रायशः सभी आचार्यों ने तथा समकालीन पराशरादि ऋषियों ने भी कश्यप ऋषि के श्लोकों एवं मतों को अपने-अपने ग्रन्थों में उधृत किया है अतः इस ग्रन्थ की प्राचीनता आर्षत्व स्वयमेव सिद्ध हो जाता है।

कश्यप संहिता ग्रन्थ की विशेषता

कश्यप संहिता के उनचास (४९) अध्याय हैं सभी अध्यायों के अनुसार श्लोकों की पूर्ण संख्या १६०५ बनती है, सभी विषय मौलिक, श्लोक आर्ष और कश्यप ऋषि द्वारा प्रणीत हैं।

ग्रन्थ की भाषा सुस्पष्ट, और सरल है विषयों के विवेचन में कोई कठिनाई कहीं भी प्रतीत नहीं होती।

संहिता ग्रन्थों में जो प्रतिपाद्य विषय होते हैं, उन सभी विषयों का समावेश कश्यप संहिता में नहीं मिलता और जो विषय इस संहिता में दिए गये हैं वे पूर्णतया स्पष्ट है। पञ्चाङ्ग परिचय, तिथि, वार, योग, नक्षत्र तथा करण इत्यादि पाँच अङ्गों का विवेचन इस ग्रन्थ की विशेषता है। मुहूर्तों का सम्बन्ध संहिता ग्रन्थों के साथ पुराना था; परन्तु आधुनिक संहिता ग्रन्थों में मुहूर्तों का अवलोकन नहीं कर सकते; परन्तु कश्यप संहिता में मुहूर्तों के विषय में विशेष चर्चा मिलती है। मेषादि द्वादश लग्नों के कृत्य, राशियों का शुभत्व एवं पापत्व, ग्रहों का शुभत्व एवं पापत्व, धर्मारम्भ एवं अभिचार योग प्रशस्ति—

गुरौ लग्ने चतुर्थेऽर्के धर्मारम्भः प्रशस्यते।
दशमेऽर्के गुरौ लग्ने त्वभिचारः प्रशस्यते॥

(क.स. अ.२२/२५)

गुरु लग्न में, सूर्य चतुर्थ में ऐसे योग में धर्मारम्भ शुभ होता है, दशम में सूर्य, लग्न में, गुरु होने पर अभिचार प्रशस्त माना गया है, धर्मारम्भ और अभिचार में देवगुरु बृहस्पति को लग्न में स्वीकार किया है केवलमात्र सूर्य की स्थिति में परिवर्तन आने से फलादेश में परिवर्तन आ गया है, ऐसे कई उदाहरण इस ग्रन्थ की शोभा बढ़ा रहे हैं।

www.drmrraina.com

मुहूर्तों के अभूत संक्रान्तियों, उपग्रहदोषों ग्रह कूटों, षोडश संस्कारों का वर्णन विस्तार से किया गया है, विवाह सम्बन्धी प्रश्न, विवाहसंस्कार का अत्यन्त विस्तृत विवेचन इस ग्रन्थ की विशेषता में चार चान्द लगा रहा है, विवाहाध्याय में प्रायशः सभी प्रमुख दोषों का विवेचन, त्याज्य दोषों का परिहार यात्रा मुहूर्तों के लिए शास्त्रीय विवरण उपलब्ध है। निखिलोत्पाताध्याय में उल्का लक्षण, परिवेष लक्षण, इन्द्रचाप लक्षण, गन्धर्व नगर लक्षण, प्रति सूर्य लक्षण, निर्घात लक्षण, दिग्दाह लक्षण, रजोलक्षण, भूकम्पलक्षणादि विषयों से परिपूर्ण, वास्तु प्रकरण में विशेष महत्वपूर्ण विषयों का प्रतिपादन किया हुआ है। गण्डमूल शान्ति विधान, सर्वोषधियो का वर्णन, बालक के अरिष्ट योग विचार, नक्षत्र वशात् जातक के जीवन में शुभाशुभ फल—

सुभगः पण्डितः शूरो दयालु धार्मिको धनी।
कलाभिज्ञः सत्यरतः पुष्यर्क्षजोऽलसः॥
धूर्तः शूरः क्रूरचेष्टः परदार रतः शठः।
अवक्रो व्यसनी दान्तः सार्पनक्षत्र जोनरः॥

भाग्यवान, पण्डित, शूरवीर, दयालु, धर्मप्रिय, धनवान, कलाओं का ज्ञाता, सत्य सम्पन्न, आलसी जातक पुष्य नक्षत्र में जन्म लेता है, आश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक धूर्त, शूरवीर, क्रूर चेष्ट, परस्त्रीलम्पट, शठ, कुटिल सदृश, व्यसनी एवं चातुर्य सम्पन्न होता है

सद्योवृष्टि लक्षण, काकमैथुन दर्शन, विभिन्नधा शिथिली विचार, शिथिलीजनने शान्ति, विचार इत्यादि विषयों से परिपूर्ण यह एक अद्भुत ग्रन्थ है।

कश्यप संहिता का संहिता ग्रन्थों में एक विशेष स्थान है। इस की शास्त्रीय विशेषता ही नहीं; अपितु ऐतिहासिक महत्व भी है, इसी कारण वश इस ग्रन्थ का सम्पादन एवं हिन्दी रूपान्तर करने का विचार मेरे मन में आया, अत्यन्त प्रयास से विभिन्न स्थानों से पाठ संकलन करके पूज्य गुरुजी डॉ. बिहारी लाल वसिष्ठ जी ने अपनी कुशाग्र बुद्धि से शुद्ध श्लोकों का गुम्फन किया था, अतः हिन्दी रूपान्तर करने में मुझे कोई भी समस्या नहीं हुई। गुरुजी का शुभाशीर्वाद मेरे साथ है।

इस ग्रन्थ के रचनाकाल के सन्दर्भ में कोई चिन्तनावसर मैंने नहीं देखा; क्योंकि सर्वत्र ब्रह्मर्षि कश्यप का नामोल्लेख बार-बार विभिन्न ग्रन्थों एवं टीकाओं में उपलब्ध होता रहा। इसलिए आर्ष रूप में इस ग्रन्थ की महिमा को समझते हुए काल विवेक को मैंने परित्यक्त कर दिया। यहाँ कहीं भी पाठ निर्धारण करने में प्रमादवश भ्रान्ति या अनुचित पाठ गृहीत हुआ हो, तो अध्याय के अन्त में दिए हुए पाठान्तर से विद्वानों को संशोधन का अवकाश प्राप्त है, नीरक्षीर विवेकी चतुर विद्वान् मेरे इस प्रयास से सन्तुष्ट होंगे; ऐसा मेरा विश्वास है।

www.drcmraina.com

इस महत्त्वपूर्ण कार्य में जिन-जिन विद्वानों की सहायता प्राप्त हुई, उनके प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन करना चाहता हूँ। सर्वप्रथम जम्मू कश्मीर राज्य के साकेतवासी महाराजाधिराज महाराजा रणवीर सिंह जी का आभारी हूँ, जिन्होंने अपनी विचक्षण बुद्धि से प्रमुख संस्कृत विद्वानों द्वारा पाण्डुलिपियों का लेखन करवा कर श्रीरघुनाथ अनुसन्धान पुस्तकालय श्रीरघुनाथ मन्दिर में पाण्डुलिपियों का संग्रह करवाया, साथ में महाराजा डॉ. कर्ण सिंह जी (भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री, सदरे रियासत) का भी आभारी हूँ, जिन्होंने अभी तक हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का खजाना सम्भाल कर रखा है, यदि पुस्तकालय में कश्यपसंहिता की पाण्डुलिपि न मिलती तो यह अमुल्य, अत्यन्त दुर्लभ ग्रन्थ सब के सामने कैसे आता।

ज्योतिष एवं संस्कृत के लिए देश-विदेशों में सर्वोत्तम योगदान देने हेतु राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विद्याधर्म विज्ञान सङ्काय प्रमुख चर परम पूज्य गुरुजी प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय जी के प्रति श्रद्धापूर्वक कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ, जिनके कुशल निर्देशन में यह कार्य करने में समर्थ हुआ।

मेरे प्रेरणा स्रोत दैवज्ञ केसरि केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्री रणवीर परिसर कोट भलवाल, जम्मू ज्योतिष विभाग के अध्यक्षचर परमधाम निवासी पूज्य गुरुजी डॉ. बिहारिलाल वसिष्ठ जी का हार्दिक धन्यवाद करते हुए सन्तोषानुभूति हो रही है, उन्होंने वास्तव में मुझे संस्कृत एवं ज्योतिष शास्त्र पढ़ने की प्रेरणा दी और मेरी हर प्रकार से सहायता की, मैं सदैव आप का आभारी रहूँगा।

'**कश्यप संहिता**' ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद की प्रेरणा की एक विचित्र कथा है, उसे लिखे बिना मुझे सन्तोष नहीं होगा, पूज्य गुरुजी डॉ० बिहारिलाल जी जब बहुत बीमार हुए तो मैं उनसे मिलने के लिए उन के निवास पर गया मेरी धर्म पत्नी श्रीमती कमलेश शास्त्री भी मेरे साथ थी, गुरुजी को भूमि पर लिटा दिया गया था। प्रायश: अचेत अवस्था में ही थे। उनकी सुपुत्री भगवान शालिग्राम का चरणामृत उन के मुख में देती जा रही थी और गुरु जी पीते जा रहे थे। यह क्रम एक-दो दिन से चल रहा था। मैंने गुरु जी को उच्च स्वर में प्रणाम कहा गुरुजी के नेत्र खुले, उन्होंने मुझे देखा और अपने हाथ से लिखने का सङ्केत किया। मैं समझ नहीं सका, चिरकाल तक हम दोनों गुरु जी के समीप बैठे रहे; परन्तु गुरुजी कोई भी बातचीत नहीं कर सके। इसी चिन्ता में हम अपने घर आ गए।

घर आकर गुरुजी के लिए चिन्तन करते रहे। रात्रिकाल में पूर्णरूपेण निद्रा भी नहीं आई लगभग ब्रह्ममुहूर्त के आसपास निद्रा आई तो गुरुजी स्वप्न में आए, बोरा भर के पुस्तकें मेरे घर में रखी सब से ऊपर 'कश्यप संहितायाः समीक्षात्मक सम्पादनम्' शोध प्रबन्ध रखा था। मैंने कहा गुरु जी! यह आपका शोध प्रबन्ध है। गुरु

www.drcmraina.com

जी ने कहा अब अगला कार्य तुम्हारा है मेरी नींद खुल गई! मैं नित्यप्रति सन्ध्या और शालिग्राम पूजा करके लगभग नौ बजे परिसर जाने के लिए सोच ही रहा था मुझे गुरुजी के लिए सन्देश मिल गया गुरु जी हमें छोड़ कर जा चुके थे- हिन्दी रूपान्तर करने की आज्ञा मुझे स्वप्न में देकर ही गुरुजी साकेत धाम चले गए। जो भी कार्य मैं कर पाया हूँ सब गुरु जी ने करवाया ऐसी मेरी मान्यता है।

गो ब्राह्मण प्रतिपालक सन्त शिरोमणि श्री प्रभुदास जी मेरे धर्म गुरु हैं, उनको नतमस्तक होकर प्रणाम करते हुए शुभाशीर्वाद की निरन्तर कामना करता हूँ। उनका आशीर्वाद सदैव मुझे मिलता रहे। परम श्रद्धेय गुरु कल्प पूज्य पिता जी पं. रामेश्वर दत्त रैणा एवं पूज्य माता श्रीमती शान्ति देवी जी को प्रणामाञ्जलि समर्पण करता हूँ, जिनके शुभाशीर्वाद से संस्कृत एवं ज्योतिष शास्त्र अध्ययन में प्रवृत्ति हुई तथा सभी कार्य सम्पन्न हुए, वे दोनों वैकुण्ठ धाम से मुझे शुभाशीर्वाद दे रहे होंगे।

विविध प्रकार से सहायता देने वाले स्वर्गीय ठा. दिवाकर सिंह जी को भावभीनि श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ और श्रीरघुनाथ जी से प्रार्थना करता हूँ उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। परमादरणीया रानी साहिबा श्रीमती सरोज देवी जी को शुभाशीर्वाद देते हुए उनके स्वस्थ की मङ्गल कामना करता हूँ। भगवान् श्रीरघुनाथ जी सदैव आप पर कृपालु रहें।

'नारायणी' स्वरूपा सद्धार्या श्रीमती कमलेश शास्त्री जी को शुभाशीर्वाद देते हुए श्रीरघुनाथ जी से प्रार्थना करता हूँ कि हमारी प्रेमभरी यात्रा चलती रहे और हम ईश्वर चिन्तन, दान, जपादि में संलग्न रहें।

श्रीमती एवं डॉ. शिवप्रसाद रैणा तथा श्रीमती एवं श्री रवीन्द्र रैणा दोनों अनुजों को आशीर्वाद देते हुए उनकी सफलता की कामना करता हूँ।

मेरे सुपुत्र चिरंजीवी पीयूष रैणा एवं पुत्रवधु सौभाग्यवती प्रिया रैणा और पौत्र श्री रघुवर रैणा, श्री नियन्त रैणा तथा सुपुत्री प्रोफेसर महिमा रैणा; इन सब को मेरा साधुवाद शुभाशीर्वाद।

कृतज्ञता

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर के निर्देशक प्रो० सुदेश शर्मा जी, प्रो० देवी प्रसाद त्रिपाठी अध्यक्ष वास्तुशास्त्र विभाग, कुलपतिचर उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित, प्रो० प्रियतमचन्द्र शास्त्री, प्राचार्यचर केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्रीरणवीर परिसर कोटभलवाल, जम्मू, डॉ. वर्चस्काम शास्त्री, सहायकाचार्य राजकीय महिला महाविद्यालय, कठुआ (जम्मू कश्मीर), Lt Gen (Retd) J.S BHATNAGAR, PVSM, AVSM, VSM Former Di-

www.drcmraina.com

rector General Supplies & Transport Former Honorary ADC to the President of India. मान्यवर जितेन्द्रस्वरूप भटनागर जी इन सबके प्रति विशेष आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने 'कश्यप संहिता' पुस्तक के लिए शुभाशंसा लिखकर पुस्तक को गौरवान्वित किया और मेरे कार्य के प्रति अपनी-अपनी सन्मति प्रदान की, मैं एतदर्थ सभी महानुभावों के प्रति कृतज्ञ रहूँगा। इस पुस्तक के लिए जिन-जिन ग्रन्थों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता ली है, उन सभी ग्रन्थलेखकों के प्रति नतमस्तक सम्मान पूर्वक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। पुस्तक लेखन में मेरे सुहृद् हृदय प्रो० राम दास शर्मा जी ज्योतिष विभागाध्यक्ष श्रीरणवीर परिसर जिन्होंने समय-समय पर मेरा उत्साहवर्धन करते हुए निरन्तर सहयोग किया है मैं उनका हृदय की गहराईयों से धन्यावाद करता हूँ और उनको साधुवाद एवं शुभाशीर्वाद प्रदान करता हूँ कि वे निरन्तर उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त रहें।

वाराणसी के सुप्रसिद्ध प्रकाशक चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस के चिरंजीवी सचिन गुप्त को साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने प्रकाशन में अपनी रुचि दिखलाते हुए सोत्साह पूर्वक कार्य सम्पन्न किया।

मेरे प्रिय श्री राजेन्द्र सौगुनियाँ जी ने समय-समय पर आवश्यकता होने पर टंकन कार्य में श्रम तथा निष्ठा से सहायता की, आपका हृदय से आभार प्रकट करते हुए मङ्गल कामना करता हूँ।

अनवधानवश अथवा मुद्रण दोष से कहीं कोई त्रुटि रह गई हो तो पण्डितगण निष्पक्ष रूप से सुधार करके मुझे सूचित करें, ताकि अग्रिम संस्करण में पुनः शुद्ध करके विद्वान् सज्जनों के सामने प्रस्तुत कर सकूँ। कहा भी है-

गच्छतः स्खलनं स्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

विदुषां वशंवदः
चन्द्रमौलिरैणा

www.drcmraina.com